EDU TERIA
E - D.N.A
Daily Newspaper Analysis
Prelims Mains Essay
By- Aarav Anand
Date: 04-12-2025
Source- जनसत्ता

पर्यावरण के लिए मुसीबत बना प्लास्टिक

प्लास्टिक ने भले ही हमारे जीवन को आसान बना दिया है, लेकिन इससे होने वाला प्रदूषण आज विश्व स्तर पर चिंता का विषय बन गया है। यह न केवल भूमि, बल्कि जल और वायु को भी प्रदूषित कर रहा है, जिससे मनुष्य, पशु-पक्षियों और समुद्री जीवों पर संकट मंडराने लगा है।

अर्चना कुमारी

ऐसा लगता है कि आधुनिक जीवनशैली में प्लास्टिक एक अनिवार्य तत्त्व बन गया है। यह भले ही सस्ता, टिकाऊ और बहुपयोगी होता है, लेकिन यही प्लास्टिक आज हमारे पर्यावरण के लिए एक गंभीर संकट बन चुका है। प्लास्टिक प्रदूषण विश्व स्तर पर चिंता का विषय है और यह न केवल भूमि को, बल्कि जल और वायु को भी प्रदूषित कर रहा है। यह प्रदूषण मनुष्य, पशु-पक्षियों और समुद्री जीवों समेत संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित कर रहा है। यही वजह है कि आज दुनियाभर के लिए प्लास्टिक कचरा बड़ी मुसीबत बन चुका है। विश्व स्तर पर हर वर्ष लगभग चार करोड़ लाख टन प्लास्टिक कचरा उत्पन्न होता है, जो पिछले दो दशकों में तेजी बढ़ा है। इसमें से लगभग अस्सी लाख टन प्लास्टिक समुद्रों में पहुंचता है, जिससे समुद्री जीवों की करीब सात सौ प्रजातियों पर गंभीर खतरा मंडरा रहा है। भारत में भी लगभग 56 लाख टन प्लास्टिक कचरा प्रतिवर्ष पैदा हो रहा है, जिसका पर्यावरण पर प्रतिकूल असर साफ तौर पर देखा जा रहा है।

हाल के वर्षों में प्लास्टिक प्रदूषण के प्रभाव को लेकर जो कुछ स्पष्ट हुआ है, उसमें जलवायु परिवर्तन के साथ इसका बढ़ता संबंध भी शामिल है। यह ऐसे समय में चिंता बढ़ा रहा है, जब दुनिया जलवायु परिवर्तन के कारण कई तरह के संकट का सामना कर रही है। वास्तव में प्लास्टिक दुनिया के लिए एक बड़ा खतरा बनता जा रहा है और वैश्विक तापमान 1.5 डिग्री सेल्सियस से नीचे रहने में भी यह बाधा पैदा करता है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि प्लास्टिक के पुनर्चक्रण में ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन होता है। प्लास्टिक के उत्पादन और उपभोग में पृथ्वी के कुल ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का लगभग 3.3 फीसद हिस्सा शामिल है। ये देखने में मामूली लग सकता है, लेकिन प्लास्टिक का हमारी पृथ्वी पर दुष्प्रभाव व्यापक है। ऐसे में ये याद करना जरूरी है कि प्लास्टिक की थैली या पानी की बोतल जो हम फेंक देते हैं, वह हमारी धरती के लिए कितनी बड़ी मुसीबत बन गई है। प्लास्टिक का कचरा न सिर्फ हमारे आस-पास गंदगी फैलाता है, बल्कि ये धरती को गर्म करने वाली गंभीर समस्या जलवायु परिवर्तन को भी गति देता है।

बदलते जलवायु और वैश्विक ताप की वजह से हिमनद तेजी से पिघल कर समुद्र का जलस्तर बढ़ा रहे हैं। इससे समुद्र किनारे बसे अनेक कस्बों एवं महानगरों के डूबने का खतरा मंडराने लगा है। बीते दो दशक में ये स्पष्ट हुआ है कि वैश्वीकरण की नवउदारवादी और निजीकरण की प्रक्रिया ने हमारे सामने बहुत-सी चुनौतियां खड़ी कर दी है। जिससे आर्थिक विकास के माडल लड़खड़ाने लगे है। मौजूदा वक्त में पूरी दुनिया विभिन्न पर्यावरणीय चुनौतियों से जूझ रही है। इनसे निपटने के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न प्रकार के प्रयास भी किए जा रहे हैं। मगर, मौजूदा चुनौतियों के सामने ये प्रयास कारगर साबित नहीं हो रहे हैं। यह सर्वविदित है कि इंसान और प्रकृति के बीच गहरा संबंध है। इंसान के लोभ, सुविधावाद एवं तथाकथित विकास की अवधारणा ने पर्यावरण का भारी नुकसान पहुंचाया है, जिस कारण न केवल नदियां, वन, रेगिस्तान, जलस्रोत सिकुड़ रहे हैं, बल्कि हिमनदों के पिघलने की रफ्तार भी तेज हो रही है। तापमान का 50 डिग्री पार करना वास्तव में खतरे का संकेत है, जिससे

मानव जीवन भी असुरक्षित होता जा रहा है। बढ़ते तापमान ने न केवल जीवन को जटिल बनाया है, बल्कि इससे अनेक लोगों की जान भी गई है। पूरी दुनिया में बढ़ता प्लास्टिक प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैव विविधता विनाश का एक जहरीला मिश्रण बनता जा रहा है। यह स्वस्थ भूमि को

> पिछली सदी में जब प्लास्टिक का आविष्कार हुआ, तो उसे विज्ञान और मानव सभ्यता की बहुत बड़ी उपलब्धि माना गया था। अब जब हम न तो इसका विकल्प तलाश पा रहे हैं और न इसका उपयोग रोक पा रहे हैं, तो क्यों न इसे विज्ञान और मानव सभ्यता की एक बड़ी असफलता मान लिया जाए? एक नई रपट के अनुसार, दुनिया भर में प्लास्टिक का उत्पादन हर साल 8.4 फीसद की दर से बढ़ रहा है, जबकि इसके पुनर्चक्रण की दर सिर्फ 9.5 फीसद है। यह असंतुलन न केवल धरती पर प्लास्टिक कचरे का पहाड़ खड़ा कर रहा है, बल्कि इंसानों और जीव-जंतुओं की सेहत पर भी गंभीर असर डाल रहा है।

रेगिस्तान में बदल रहा है, समृद्ध पारिस्थितिकी तंत्र को कमजोर कर रहा है और इससे मानव जीवन पर तरह-तरह के खतरे पैदा हो रहे हैं।

विदित रहे कि प्लास्टिक की खोज वर्ष 1907 में की गई थी, बहुत कम समय में ही इसका उपयोग बढ़ गया। कभी वरदान समझा जाने वाला प्लास्टिक आज दुनिया के लिए बड़ी समस्या बन चुका है। भले ही प्लास्टिक ने हमारे जीवन को काफी आसान बनाया है, लेकिन दूसरी तरफ यह आज धरती के लिए एक बड़ी चुनौती भी बन गया है। सस्ता और टिकाऊ होने की वजह से प्लास्टिक का उपयोग बड़े पैमाने पर हो रहा है। इस कारण हर साल लाखों टन का प्लास्टिक कचरा पैदा होता है, जोकि पर्यावरण को गंभीर नुकसान पहुंचाने का काम करता है।

प्लास्टिक कचरा नदियां, समुद्र, वायु हर जगह फैल चुका है, इसलिए इसे वैश्विक आपदा की संज्ञा देना गलत नहीं होगा। आज प्लास्टिक प्रदूषण दुनिया के हर कोने में फैल चुका है, यह हमारे पीने के पानी, भोजन और पर्यावरण में समा रहा है। इस स्थिति में प्लास्टिक कचरे की गंभीर समस्या से निपटने के लिए वैश्विक संकल्प की जरूरत है। यह अब सिर्फ पर्यावरण का मुद्दा नहीं, बल्कि वैश्विक मानव अस्तित्व और स्वास्थ्य के लिए भी एक गंभीर खतरा बन चुका है। पिछली सदी में जब प्लास्टिक के विभिन्न रूपों का आविष्कार हुआ, तो उसे विज्ञान और मानव सभ्यता की बहुत बड़ी उपलब्धि माना गया था। अब जब हम न तो इसका विकल्प तलाश पा रहे हैं और न इसका उपयोग ही रोक पा रहे हैं, तो क्यों न इसे विज्ञान और मानव सभ्यता की सबसे बड़ी असफलता मान लिया जाए?'

कम्युनिकेशन्स अर्थ एंड एनवायरनमेंट' पत्रिका में प्रकाशित एक नई रपट के अनुसार, दुनिया भर में प्लास्टिक का उत्पादन हर साल 8.4 फीसद की दर से बढ़ रहा है, जबकि इसके पुनर्चक्रण की दर 9.5 फीसद तक ही सीमित है। यह खतरनाक असंतुलन न केवल धरती पर प्लास्टिक कचरे का पहाड़ खड़ा कर रहा है, बल्कि इंसानों और जीव-जंतुओं की सेहत पर भी नकारात्मक असर डाल रहा है। रपट में कहा गया है कि वर्ष 2022 में वैश्विक स्तर पर चालीस करोड़ टन प्लास्टिक का उत्पादन हुआ, जिसमें से केवल 3.8 करोड़ टन का ही पुनर्चक्रण किया गया। अनुमान है कि प्लास्टिक उत्पादन की मौजूदा रफ्तार इसी तरह जारी रही तो वर्ष 2050 तक यह आंकड़ा दोगुना होकर अस्सी करोड़ टन तक पहुंच सकता है, जो पूरी दुनिया में एक बड़े संकट का रूप ले सकता है।

भारत में सरकार की ओर से पूर्व में देश को स्वच्छ भारत मिशन के तहत एकल उपयोग प्लास्टिक को बंद करने की घोषणा की गई है। हालांकि इस दिशा में अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। सरकार की ओर से इस मामले में जागरूकता और प्रोत्साहन की अभी भी बहुत जरूरत है। संयुक्त राष्ट्र की संस्था यूएनईपी की एक रपट के मुताबिक, अच्छी योजना के साथ काम किया जाए तो प्लास्टिक से दूरी बनाने पर दुनिया वर्ष 2040 के अंत तक 4,500 अरब डालर बचा सकती है। इसमें एकल उपयोग प्लास्टिक का उत्पादन न करने से बचने वाली लागत भी शामिल है। वैसे फिलहाल एक बड़ी राशि प्लास्टिक के कारण सेहत और पर्यावरण को हो रहे नुकसान पर खर्च हो रही है। जलवायु परिवर्तन पर प्लास्टिक उत्पादन का प्रभाव एक ऐसा क्षेत्र है, जिस पर समय रहते गंभीरता से ध्यान देने की आवश्यकता है। इस समस्या से निजात पाने के लिए न केवल प्रभावी नीति निर्माण, बल्कि वैश्विक सहयोग, तकनीकी नवाचार और जन-भागीदारी की भी नितांत जरूरत है। वरना वह दिन दूर नहीं, जब प्लास्टिक का जहर हमारी अगली पीढ़ियों की सांसों तक पहुंच जाएगा।

'भारत में दो सौ देशों के 72,000 से अधिक छात्र अध्ययन कर रहे'

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 3 दिसंबर।

सरकार ने राज्यसभा को बताया कि वर्तमान में लगभग 200 देशों के कुल 72,218 विदेशी छात्र भारत में अध्ययन कर रहे हैं। शिक्षा राज्य मंत्री सुकांत मजूमदार ने उच्च सदन में प्रश्नकाल के दौरान पूरक प्रश्नों के उत्तर में बताया कि प्रतिष्ठित संस्थान का दर्जा प्रदान करने के लिए शुरू की गई विश्वस्तरीय संस्थान योजना के तहत अब तक आठ सार्वजनिक संस्थानों को 6,198.99 करोड़ रुपए की राशि मंजूर की गई है।

उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2026 में भारत के 54 उच्च शिक्षण संस्थान शामिल किए गए हैं, जबकि 2014-15 में यह संख्या केवल 11 थी। उस समय केंद्र में भाजपा सरकार सत्ता में आई थी। मंत्री ने कहा, अब क्यूएस डब्लूयूआर 2026 में 54 भारतीय संस्थानों को रैंक दिया गया है। उन्होंने इसे क्यूएस रैंकिंग में भारत की अब तक की सबसे बड़ी भागीदारी बताया। मजूमदार ने कहा कि भारत में लगभग 72,218 विदेशी छात्र हैं। वे 200 देशों के हैं और विभिन्न पाठ्यक्रमों में अध्ययन कर रहे हैं। केंद्र सरकार विदेशी विश्वविद्यालयों और विदेशी छात्रों के साथ सहयोग बढ़ाने के लिए कई कदम उठा रही है।

मंत्रालय ने विश्व स्तरीय संस्थान योजना शुरू की थी, ताकि सार्वजनिक और निजी श्रेणी से 10-10 उच्च शिक्षण संस्थानों को प्रतिष्ठित संस्थान का दर्जा दिया जा सके और उन्हें विश्व-स्तरीय शिक्षण तथा शोध संस्थानों के रूप में विकसित किया जा सके।

रुपया का इस साल एशिया में सबसे खराब प्रदर्शन

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 3 दिसंबर।

निर्यात दबाव और विदेशी निवेशकों की कमजोर दिलचस्पी ने भारतीय शेयर बाजार की आकर्षक बढ़त को भी कम कर दिया है। भारतीय रुपया बुधवार को अमेरिकी डालर के मुकाबले 90 के पार रेकार्ड निचले स्तर पर आ गया। इस साल अब तक 5.3 फीसद की गिरावट के साथ, रुपया 2022 के बाद से अपनी सबसे तेज सालाना गिरावट की ओर बढ़ रहा है।

रुपया इस साल अब तक एशिया की सबसे खराब प्रदर्शन करने वाली मुद्रा बनकर उभरा है। यह तब हुआ जब डालर इंडेक्स- जो छह प्रमुख करंसी के मुकाबले डालर को मापता है - 0.18 फीसद गिरकर 99.17 पर था। इसके पीछे संभावित कारण हो सकते हैं। भारत उन कुछ बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से है जिनका अमेरिका के साथ कोई व्यापार समझौता नहीं है। हालांकि, अधिकारी उम्मीद बनाए हुए हैं, लेकिन लंबे समय तक इसमें देरी से रुपए पर भारी असर पड़ा है।अमेरिका के भारी शुल्क ने अपने सबसे बड़े बाजार में भारत की निर्यात प्रतिस्पर्धा को नुकसान पहुंचाया है। इससे न सिर्फ व्यापार को नुकसान हुआ है, बल्कि विदेशी निवेशकों की दिलचस्पी भी कम हुई है, जिससे रुपए में इस साल अब तक पांच फीसद की गिरावट आई है।

विदेशी निवेशकों का लगातार निकलना

विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआइआइ) ने इस साल अब तक भारतीय इक्विटी से करीब 17 अरब डालर निकाले हैं। इसके अलावा शुद्ध एफडीआइ आना और विदेशी व्यासायिक उधारी कम रही है, जिससे रुपए पर दबाव बढ़ गया है। एफपीआइ की बिकवाली ने विदेशी मुद्रा की मांग-पूर्ति के अंतर को बढ़ा दिया है, जिससे मूल्यह्रास तेज हो गया है।

चालू खाते का बढ़ता घाटा

दूसरी तिमाही की मजबूत सकल घरेलू उत्पाद बढ़ोतरी मुद्रा को सहारा नहीं दे पाई, क्योंकि भारत के बढ़ते चालू खाते घाटे (सीएडी) को लेकर चिंताएं फिर से सामने आईं। दूसरी तिमाही में भारत का सीएडी 12.3 अरब डालर (जीडीपी का 1.3 फीसद) था। साथ ही, सोने और चांदी की रेकार्ड-ऊंची कीमतों ने आयात बिल बढ़ा दिया है।

आरबीआइ का सीमित दखल

भारतीय रिजर्व बैंक स्थिति को संभालने के लिए कदम उठा सकता है, लेकिन उसका दखल सीमित ही रह सकता है। विशेषज्ञों का कहना है कि केंद्रीय बैंक का ध्यान रुपए के किसी खास स्तर को बचाने के बजाय तेज और अचानक उतार-चढ़ाव को रोकने पर रहने की उम्मीद है।

आरबीआइ ब्याज दरों में कटौती की उम्मीदें

आरबीआइ की मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) की बैठक बुधवार को शुरू हुई, जिसमें ब्याज दरों पर फैसला पांच दिसंबर को होना है, जो अमेरिकी फेडरल रिजर्व के 10 दिसंबर के फैसले से पहले है। विशेषज्ञों का मानना है कि आरबीआइ द्वारा रेपो रेट में कटौती से रुपए की और बिकवाली हो सकती है।

रेलवे जल्द ही आरक्षण खिड़की से खरीदे गए

सभी तत्काल टिकट के लिए ओटीपी अनिवार्य करेगा

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 3 दिसंबर।

रेलवे आरक्षण काउंटर से 'तत्काल' ट्रेन टिकट बुक करने के लिए यात्रियों को अब अपने मोबाइल फोन पर प्राप्त होने वाला वन-टाइम पासवर्ड बताना होगा। इस कदम का उद्देश्य अंतिम समय में टिकट बुकिंग सुविधा के दुरुपयोग को रोकना है। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।

रेल मंत्रालय ने 17 नवंबर को परीक्षण आधार पर आरक्षण काउंटर से बुक टिकट के लिए ओटीपी-आधारित तत्काल टिकट प्रणाली शुरू की।

इसकी शुरुआत कुछ ट्रेन से हुई और जल्द ही इसकी संख्या बढ़ाकर 52 कर दी गई। मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि अगले कुछ दिनों में काउंटर से टिकट के लिए यह आरक्षण प्रणाली शेष सभी ट्रेन के लिए लागू कर दी जाएगी। इसके अनुसार, ओटीपी-आधारित तत्काल आरक्षण प्रणाली का प्रस्ताव आम उपयोगकर्ताओं के लिए अंतिम समय में टिकट बुकिंग सुविधा को और अधिक सुविधाजनक बनाने के लिए किया गया है। मंत्रालय ने कहा कि इस प्रणाली के तहत आरक्षण काउंटर पर तत्काल टिकट बुक करते समय यात्री को आरक्षण फार्म में दिए गए मोबाइल नंबर पर एक ओटीपी प्राप्त होता है। ओटीपी सत्यापन सफल होने के बाद ही टिकट की पुष्टि की जाती है। अधिकारियों ने बताया कि पिछले कुछ महीनों में रेल मंत्रालय ने यात्रियों को टिकट आरक्षण तक उचित पहुंच प्रदान करने तथा बुकिंग एजंटों को अपने लाभ के लिए प्रणाली का दुरुपयोग करने से हतोत्साहित करने के लिए कुछ उपाय शुरू किए हैं।

केंद्रीय उत्पाद शुल्क विधेयक लोकसभा में मंजूर

वित्त मंत्री ने विपक्षी सदस्यों की चिंताओं को खारिज किया, कहा - कोई अतिरिक्त कर नहीं है

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 3 दिसंबर।

लोकसभा ने बुधवार को केंद्रीय उत्पाद शुल्क (संशोधन) विधेयक, 2025 को पारित कर दिया, जिसमें तंबाकू उत्पादों पर जीएसटी क्षतिपूर्ति उपकर समाप्त होने के बाद समान कर बोझ रखने के लिए उत्पाद शुल्क लगाने का प्रावधान है। उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1944 में संशोधन वाले विधेयक को चर्चा और वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के जवाब के बाद ध्वनिमत से पारित कर दिया गया।

वित्त मंत्री ने कहा कि तंबाकू और इसके उत्पादों पर उत्पाद शुल्क लगाने से जीएसटी क्षतिपूर्ति कर समाप्त करने के बाद भी कर का बोझ समान रहेगा। चूंकि जीएसटी कानून में अधिकतम कर दर 40 फीसद तय है, इसलिए यदि जीएसटी उपकर हटा दिया जाता है और उत्पाद शुल्क नहीं लगाया जाता है तो तंबाकू पर कुल कर बोझ वर्तमान स्तर से कम हो जाएगा। यह सुनिश्चित करने के लिए कि कर बोझ (इंसिडेंस) जीएसटी मुआवजा उपकर के दौरान जितना था, उससे कम न हो, हम यह कर लेकर आ रहे हैं। एक तरह से हम कह रहे हैं कि कर बोझ कम होने से सिगरेट सस्ती नहीं होनी चाहिए। विधेयक में प्रस्ताव है कि तंबाकू उत्पादों -जैसे सिगरेट, चबाने वाला तंबाकू, सिगार, हुक्का, ज़र्दा और सुगंधित तंबाकू-पर लगाए जा रहे जीएसटी क्षतिपूर्ति उपकर को हटाकर उसकी

सीतारमण ने कहा, यह विधेयक इसलिए आवश्यक है क्योंकि कोविड के दौरान राज्यों के राजस्व घाटे को पूरा करने के लिए केंद्र द्वारा लिया गया ऋण 'कुछ ही हफ्तों' में चुका दिया जाएगा, जिसके बाद मुआवजा उपकर लेना रोक दिया जाएगा। शायद अगले कुछ ही हफ्तों में यह पूरा कर्ज चुकता हो जाएगा। इसलिए केंद्र सुनिश्चित करना चाहता है कि उत्पाद शुल्क फिर से हमारे पास आ जाए ताकि हम यह ड्यूटी लगा सकें।

जगह उत्पाद शुल्क लगाया जाए। वर्तमान में तंबाकू पर 28 फीसद जीएसटी के साथ अलग-अलग दरों पर उपकर लगता है। विधेयक में अपरिष्कृत (कच्चे) तंबाकू पर 60-70 फीसद उत्पाद शुल्क लगाने का प्रस्ताव है। सीतारमण ने कहा कि यह विधेयक इसलिए आवश्यक है क्योंकि कोविड के दौरान राज्यों के राजस्व घाटे को पूरा करने के लिए केंद्र द्वारा लिया गया ऋण 'कुछ ही हफ्तों' में चुका दिया जाएगा, जिसके बाद मुआवजा उपकर लेना रोक दिया जाएगा। शायद अगले कुछ ही हफ्तों में यह पूरा कर्ज चुकता हो जाएगा। इसलिए केंद्र सुनिश्चित करना चाहता है कि उत्पाद शुल्क फिर से हमारे पास आ जाए ताकि हम यह ड्यूटी लगा सकें।' एक जुलाई, 2017 को जीएसटी लागू करते समय राज्यों को जीएसटी के कारण हुए राजस्व नुकसान की भरपाई के लिए एक मुआवजा उपकर तंत्र स्थापित किया गया था, जिसकी अवधि प्रारंभ में 5 वर्ष (30 जून 2022 तक) निर्धारित थी। बाद में मुआवजा उपकर की वसूली की अवधि 4 वर्ष बढ़ाकर 31 मार्च 2026 कर दी गई और इस अवधि में संग्रहित राशि का उपयोग कोविड काल में राज्यों की जीएसटी कमी की भरपाई के लिए केंद्र द्वारा लिए गए 2.69 लाख करोड़ रुपए के ऋण के पुनर्भुगतान में किया जा रहा है।

उन्होंने विधेयक पर कुछ विपक्षी सदस्यों की चिंताओं को खारिज करते हुए कहा कि यह नया कानून नहीं है और कोई अतिरिक्त कर भी नहीं है। सीतारमण ने कहा कि कुछ सदस्यों का मानना है कि यह उपकर है जिसका लाभ केंद्र को मिलेगा, जबकि ऐसा नहीं है। यह उपकर नहीं है, बल्कि उत्पाद शुल्क है जो डिविसिबल (विभाज्य) पूल में जाएगा। उन्होंने विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) की एक टिप्पणी का उल्लेख करते हुए कहा कि भारत में सिगरेट पर खुदरा मूल्य के अनुसार कर बोझ कुल 53 फीसद रहा है, जबकि डब्लूएचओ का मानक 75 है। आस्ट्रेलिया और ब्रिटेन जैसे कुछ देशों में तो यह दर 80 से 85 फीसद है। हम नहीं चाहते कि अब सिगरेट किफायती रहे। तंबाकू उत्पादक किसानों को लेकर कुछ सदस्यों की चिंताओं पर वित्त मंत्री ने कहा कि फसल विविधीकरण योजना के तहत 10 बड़े तंबाकू उत्पादक राज्यों में 2015 से तंबाकू किसानों को वैकल्पिक फसलें उगाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

उन्होंने तेलंगाना में मिर्च, ओड़ीशा में सब्जी और कर्नाटक में सोयाबीन तथा गन्ना जैसी फसलों के लिए तंबाकू किसानों को सहायता देने संबंधी सरकार के प्रयासों का जिक्र किया। उन्होंने राज्यों को 51 फीसद राशि देने की द्रमुक सांसद कलानिधि वीरास्वामी की मांग पर कहा कि इस बारे में निर्णय वित्त आयोग करता है।

राज्यों को सहायता देने के बारे में केंद्र सरकार के प्रयासों का उल्लेख करते हुए सीतारमण ने कहा कि कोविड महामारी के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राज्यों के लिए कोष बनाया जिसमें से उन्हें 50 वर्ष के लिए ब्याज रहित कर्ज देने की व्यवस्था की गई। यह सरकार राज्यों के बारे में सोचती है। उन्होंने इस विधेयक के पारित होने के बाद बीड़ी मजदूरों के रोजगार को लेकर विपक्ष के कुछ सांसदों की आशंकाओं पर कहा कि बीड़ी में कर बोझ पर कोई बदलाव नहीं किया गया है। बीड़ी श्रमिकों के रोजगार पर कोई असर नहीं पड़ेगा क्योंकि उसकी दर वैसे ही है। एक पैसे की बढ़ोतरी नहीं की गई है।

रूस के राष्ट्रपति पुतिन आज पहुंचेंगे भारत

दोनों देशों के बीच लग सकती है कई सैन्य समझौतों पर मुहर

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 3 दिसंबर।

भारत और रूस के बीच रणनीतिक साझेदारी के 25 वर्ष पूरे होने के मौके पर राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन गुरुवार को भारत के आधिकारिक दौरे पर आ रहे हैं। पुतिन इस यात्रा के दौरान भारत के साथ कई सैन्य समझौते करेंगे। रूस के निचले सदन 'ड्यूमा' ने भारत और रूस के साथ सैन्य समझौते को मंजूरी दे दी है। साथ ही रूसी मंत्रिमंडल ने असैन्य परमाणु ऊर्जा में द्विपक्षीय सहयोग को प्रगाढ़ बनाने के लिए एक सहमति पत्र पर हस्ताक्षर को मंजूरी भी दे दी है। गुरुवार को ही रूस और भारत के रक्षा मंत्रियों के बीच महत्त्वपूर्ण वार्ता होगी।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और उनके रूसी समकक्ष आंद्रे बेलौसोव के बीच गुरुवार को होने वाली वार्ता में एस-400 मिसाइल प्रणाली की खरीद, सुखोई 30 लड़ाकू विमानों के उन्नयन और रूस से अन्य महत्त्वपूर्ण सैन्य साजो सामान खरीदने में भारत की रुचि एजंडे में रहेगी। शीर्ष सैन्य अधिकारियों ने बताया कि समग्र ध्यान दोनों देशों के बीच पहले से ही घनिष्ठ रक्षा और सुरक्षा संबंधों को और विस्तारित करने पर होगा, जिसमें रूस से भारत को सैन्य साजो सामान की शीघ्र आपूर्ति सुनिश्चित करने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। बेलौसोव रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के भारत दौरे के प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा होंगे। राजनाथ सिंह और आंद्रे बैलोसोव के बीच यह वार्ता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और पुतिन के बीच शिखर बैठक से एक दिन पहले होगी।

बेलौसोव के साथ बैठक में, भारतीय पक्ष द्वारा निर्धारित समय सीमा के भीतर सैन्य साजो सामान की आपूर्ति पर जोर दिए जाने की संभावना है। सशस्त्र बलों की यह लंबे समय से शिकायत रही है कि रूस से महत्त्वपूर्ण पुर्जों और उपकरणों की आपूर्ति में लंबा समय लगता है, जिससे उस देश से खरीदी गई सैन्य प्रणालियों का रखरखाव प्रभावित होता है।

500 मिसाइल प्रणाली खरीदने पर भी विचार कर सकता है भारत

भारत रूस से एस-500 मिसाइल प्रणाली खरीदने पर भी विचार कर सकता है। रूसी सत्ता प्रतिष्ठान 'क्रेमलिन' के प्रवक्ता दिमित्री पेसकोव ने मंगलवार को कहा कि रूस द्वारा भारत को एसयू-57 लड़ाकू विमान की आपूर्ति की संभावना पर चर्चा हो सकती है। भारत पांचवीं पीढ़ी के लड़ाकू विमानों की एक खेप खरीदने की प्रक्रिया में है। दसा एविएशन का राफेल, लाकहीड मार्टिन का एफ-21, बोइंग का एफ/ए-18 और यूरोफाइटर टाइफून मुख्य दावेदार हैं। मोदी-पुतिन शिखर बैठक में भारत-रूस के समग्र रक्षा संबंधों की समीक्षा होने की भी संभावना है। दूसरी ओर, स्थानीय मीडिया में आईं खबरों के अनुसार, रूस की सरकारी परमाणु ऊर्जा कंपनी 'रोसएटम' को रूसी सरकार की ओर से इस सहमति पत्र पर भारत के संबंधित अधिकारियों के साथ हस्ताक्षर करने के लिए अधिकृत किया गया है। यह कंपनी तमिलनाडु में कुडनकुलम परमाणु ऊर्जा परियोजना के तहत कई रिएक्टर का निर्माण कर रही है।

लक्ष्य का पीछा करते हुए दक्षिण अफ्रीका की सबसे बड़ी जीत

भारत को चार विकेट से हराया, तीन मैचों की शृंखला 1-1 से बराबर

रायपुर, 3 दिसंबर (भाषा)।

सलामी बल्लेबाज एडेन मार्करम के शतक के बाद मैथ्यू ब्रीट्जके और डेवाल्ड ब्रेविस के अर्धशतक से दक्षिण अफ्रीका ने विराट कोहली और रुतुराज गायकवाड़ शतकों पर पानी फेरते हुए भारत को दूसरे एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच में चार विकेट से हराकर तीन मैच की शृंखला 1-1 से बराबर की।

भारत के 359 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए दक्षिण अफ्रीका ने मार्करम की 98 गेंद में 10 चौकों और चार छक्कों से 110 रन की पारी और ब्रीट्जके (68 रन, 64 गेंद, पांच चौके) तथा ब्रेविस (54 रन, 34 गेंद) के अर्धशतक से 49.2 ओवर में छह विकेट पर 362 रन बनाकर जीत दर्ज की। यह विदेशी सरजमीं पर लक्ष्य का पीछा करते हुए दक्षिण अफ्रीका की सबसे बड़ी जीत है जबकि भारत के खिलाफ लक्ष्य का पीछा करते हुए किसी भी टीम की संयुक्त रूप से सबसे बड़ी जीत है। ब्रीट्जके और ब्रेविस ने चौथे विकेट के लिए 64 गेंद में 92 रन की आक्रामक साझेदारी भी की जबकि मार्करम ने कप्तान तेम्बा बावुमा (46) के साथ दूसरे विकेट के लिए 101 और ब्रीट्जके के साथ तीसरे विकेट के लिए 70 रन जोड़े।

कोहली (102 रन, 93 गेंद, सात चौके, दो छक्के) ने इससे पहले रेकार्ड में सुधार करने वाला 53वां और लगातार दूसरा शतक जड़ने के अलावा गायकवाड़ (105 रन, 83 गेंद, 12 चौके, दो छक्के) के साथ तीसरे विकेट के लिए 195 रन की सझेदारी भी की जिससे भारत ने पांच विकेट पर 358 रन का मजबूत स्कोर खड़ा किया। कप्तान लोकेश राहुल ने भी नाबाद 66 रन बनाए। कोहली और गायकवाड़ की यह साझेदारी दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में इस विकेट की भारत की सबसे बड़ी साझेदारी है।

लक्ष्य का पीछा करते हुए दक्षिण अफ्रीका ने पांचवें ओवर में ही क्विंटन डिकाक (08) का विकेट गंवा दिया। दक्षिण अफ्रीका को अंतिम पांच ओवर में 27 रन की जरूरत थी लेकिन टानी डिजार्जी 17 रन बनाने के बाद पैर की मांसपेशियों में खिंचाव के कारण रिटायर्ड हर्ट हो गए लेकिन कोर्बिन बाश (नाबाद 29) ने टीम को जीत दिला दी।

दूसरा एकदिवसीय मैच

एडेन मारक्रम ने 98 गेंद में110 रन की पारी खेली। इस दौरान उन्होंने 10 चौके और चार छक्के भ लगाए। मारक्रम ने कप्तान तेम्बा बावुमा (46) के साथ दूसरे विकेट के लिए 101 और ब्रीट्जके के साथ तीसरे विकेट के लिए 70 रन जोड़े। ब्रीट्जके और ब्रेविस ने चौथे विकेट के लिए 64 गेंद में 92 रन की साझेदारी की।

गिल व पांड्या दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टी20 शृंखला के लिए टीम में

भारत के स्टार बल्लेबाज शुभमन गिल और आलराउंडर हार्दिक पांड्या अपनी-अपनी चोट से उबर गए हैं जिससे बुधवार को उन्हें दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ आगामी टी20 शृंखला के लिए टीम में शामिल किया गया। गिल दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ कोलकाता में खेले गए पहले टेस्ट मैच के दौरान चोटिल हो गए थे। बोर्ड ने कहा कि गिल की भागीदारी बीसीसीआइ के 'सेंटर आफ एक्सीलेंस' से उनकी फिटनेस पर मिलने वाली मंजूरी पर निर्भर करेगी। पांड्या ने भी मंगलवार को हैदराबाद में पंजाब के खिलाफ सैयद मुश्ताक अली ट्राफी मैच के दौरान अपनी फिटनेस साबित करने के बाद भारतीय टीम में वापसी की।

रोहित शर्मा शीर्ष पर बरकरार | **रैंकिंग** | **ऋषभ पंत 14वें स्थान पर खिसके**

विराट कोहली एकदिवसीय बल्लेबाजी में चौथे स्थान पर पहुंचे

दुबई, 3 दिसंबर (भाषा)।

स्टार भारतीय बल्लेबाज विराट कोहली दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ रांची में पहले एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैच में विजयी शतकीय पारी की बदौलत बुधवार को जारी अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद की नवीनतम एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय बल्लेबाजी रैंकिंग में चौथे स्थान पर पहुंच गए। कोहली ने रविवार को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ 120 गेंद में 135 रन की पारी खेली जो 50 ओवर के प्रारूप में उनका 52वां शतक था। उनकी पारी की बदौलत भारत ने 17 रन से जीत दर्ज की।

सैंतीस साल के कोहली के अब 751 रैंकिंग अंक हैं। वह शीर्ष पर बरकरार पूर्व भारतीय कप्तान रोहित शर्मा (783), न्यूजीलैंड के डेरिल मिचेल (766) और अफगानिस्तान के इब्राहिम जादरान (764) से पीछे हैं। कोहली ने भारत के एकदिवसीय कप्तान शुभमन गिल को पीछे छोड़ा जो गर्दन की चोट के कारण दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ तीन मैच की मौजूदा शृंखला से बाहर होने के कारण पांचवें स्थान पर खिसक गए। श्रेयस अय्यर नौवें स्थान पर बने हुए हैं।

कोहली के अब 751 रैंकिंग अंक हैं। वह शीर्ष पर बरकरार पूर्व भारतीय कप्तान रोहित शर्मा, न्यूजीलैंड के डेरिल मिचेल और अफगानिस्तान के इब्राहिम जादरान से पीछे हैं। कोहली ने शुभमन गिल को पीछे छोड़ा जो गर्दन की चोट के कारण दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ तीन मैच की मौजूदा शृंखला से बाहर होने के कारण पांचवें स्थान पर खिसक गए।

दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहले मैच में चार विकेट चटकाने वाले बाएं हाथ के कलाई के स्पिनर कुलदीप यादव गेंदबाजों की सूची में एक स्थान के फायदे से छठे पायदान पर हैं। टेस्ट बल्लेबाजों की सूची में भारत के सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल नौवें स्थान पर बने हुए हैं। विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत भी 12वें से 14वें स्थान पर खिसक गए हैं।

टेस्ट गेंदबाजों की सूची में भारत के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह 879 अंक के साथ शीर्ष पर बरकरार हैं। उन्होंने न्यूजीलैंड के तेज गेंदबाज मैट हेनरीपर 33 अंक की बढ़त बना रखी है। दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टेस्ट शृंखला में कमजोर प्रदर्शन के बाद तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज 11वें से 13वें जबकि कुलदीप 13वें से 15वें स्थान पर खिसक गए। टी20 अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग में भारत के अभिषेक शर्मा और वरुण चक्रवर्ती ने क्रमशः बल्लेबाजों और गेंदबाजों की रैंकिंग में अपना शीर्ष स्थान कायम रखा है।

Source- दैनिक जागरण

उच्च शिक्षण संस्थानों में बदली तस्वीर, सामान्य श्रेणी से अधिक हुए आरक्षित वर्ग के छात्र

आइएनएस, नई दिल्ली: लंबे समय से यह माना जाता रहा है कि देशभर के कालेज और यूनिवर्सिटी में संख्या के लिहाज से सामान्य वर्ग के छात्रों का दबदबा है। लेकिन पिछले दशक में एक बड़ा बदलाव आया है और उच्च शिक्षण संस्थानों में आरक्षण का असर दिखने लगा है। इसी का नतीजा है कि आरक्षित वर्ग के छात्रों ने कालेज और यूनिवर्सिटी में नामांकन के मोर्चे पर सामान्य वर्ग के छात्रों को पीछे छोड़ दिया है। अब कालेज और यूनिवर्सिटी में 100 में से 60 से अधिक छात्र अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/अन्य पिछड़े वर्गों से आ रहे हैं।

- आइआइएम उदयपुर के अध्ययन में शिक्षा के क्षेत्र में सामने आया समावेशी बदलाव
- उच्च शिक्षण संस्थानों में एससी,एसटी,ओबीसी छात्रों की संख्या हुई 60% से अधिक
- वर्ष 2010-11 और 2022-23 में 60 हजार से अधिक संस्थानों और चार करोड़ से अधिक छात्रों के बीच किया गया सर्वे

95 लाख ज्यादा रही है नामांकन में आरक्षित वर्ग के छात्रों की संख्या सामान्य वर्ग की तुलना में 2023 में

शिक्षण संस्थानों में आरक्षण का असर

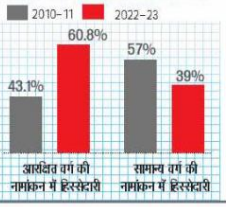

जरूरतमंदों को मिले आरक्षण

रिपोर्ट में पूर्व मुख्य न्यायाधीश वीआर गवई के बयान का भी जिक्र किया गया है, जिसमें उन्होंने एससी और एसटी वर्ग के लिए भी क्रीमी लेयर की व्यवस्था लागू करने पर जोर दिया है। उन्होंने कहा था कि अगर आरक्षण का फायदा बार-बार एक ही परिवार को मिलता रहेगा तो एक वर्ग के अंदर वर्ग उभरेगा। आरक्षण का फायदा जरूरतंद लोगों तक जरूर पहुंचना चाहिए।

मौजूदा नैरेटिव के विपरीत उच्च शिक्षण संस्थानों में नामांकन की बात करें तो एससी/एसटी और ओबीसी वर्ग के छात्रों का प्रभुत्व दिख रहा है। आरक्षित वर्ग के छात्रों ने संख्या के लिहाज से सामान्य वर्ग को बड़े अंतर से पीछे छोड़ दिया है।
- प्रोफेसर, वेंकटरमनन कृष्णमूर्ति

उच्च शिक्षा में एससी,एसटी,ओबीसी के लिए अवसरों की उपलब्धता अब कोई मुद्दा नहीं है। अब यह सुनिश्चित करना होना चाहिए कि क्रीमी लेयर के दायरे में आने वाले अपने से कमजोर लोगों के अवसरों को न हथिया लें।
- सह लेखक त्यागराजन

आइआइएम उदयपुर के सेंटर फार डेवलपमेंट पालिसी एंड मैनेजमेंट द्वारा किए गए अध्ययन के अनुसार अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/अन्य पिछड़े वर्गों की नामांकन में संयुक्त हिस्सेदारी 2010-11, में 43.1 प्रतिशत थी। 2022-23 में यह तेजी से बढ़ कर 60.8% पर पहुंच गई है। सिर्फ 2023 में आरक्षित वर्गों के छात्रों का नामांकन सामान्य वर्गों के छात्रों से 95 लाख अधिक रहा है। वहीं, सामान्य वर्ग के छात्रों की नामांकन में हिस्सेदारी 2011 में 57% थी जो 2023 में गिर कर 39% पर पहुंच गई है। यह भी संख्या तब है जब इसमें आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के छात्रों की संख्या शामिल है। अध्ययन के निष्कर्ष 13 वर्ष के आल इंडिया सर्वे आफ हायर एजुकेशन (एआइएसएचई) के आंकड़ों पर आधारित हैं। शोधकर्ताओं ने अध्ययन के दौरान 2010-11 से 20222-23 की जनगणना के स्तर की एआइएसएचई रिपोर्ट का विश्लेषण किया। इसमें 60,380 संस्थानों और 4.38 करोड़ छात्रों को कवर किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण में पाया गया कि सरकारी संस्थानों में एससी/एसटी/ओबीसी छात्रों की नामांकन में हिस्सेदारी 62.2% और निजी संस्थानों में 60% है। संस्थानों में छात्रों की सामाजिक संरचना में बदलाव सभी राज्यों और विषयों तक है। नामांकन में सामान्य वर्ग के छात्रों की संख्या साल दर साल कम हो रही है और इनको आरक्षित वर्ग के छात्रों से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है। आरक्षित वर्ग के छात्र ऊंची मेरिट हासिल कर सामान्य सीटों पर भी दाखिला ले रहे हैं।

संचार साथी एप प्री-इंस्टाल करने का फैसला सरकार ने पलटा

संचार मंत्री सिंधिया ने लोकसभा में कहा, संचार साथी एप किसी भी निगरानी का माध्यम नहीं

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

संचार साथी एप को मोबाइल फोन हैंडसेट की बिक्री से पहले उसमें डालने (प्री-इंस्टाल) की अनिवार्यता का निर्देश सरकार ने बुधवार को वापस ले लिया। हालांकि संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने साफ किया कि इस एप से न स्नूपिंग (निगरानी) संभव है, न स्नूपिंग होगी। संचार मंत्रालय ने 28 नवंबर को मोबाइल फोन निर्माता कंपनियों को संचार साथी एप को मोबाइल हैंडसेट की बिक्री से पहले उसमें डालने या इंस्टाल करने का निर्देश दिया था। लेकिन इस एप को निगरानी या जासूसी का हथियार बताकर विपक्ष बीते दो दिनों से हंगामा कर रहा था।

संचार मंत्रालय ने एक बयान में कहा, सरकार ने मोबाइल निर्माताओं के लिए (संचार साथी एप) प्री-इंस्टालेशन जरूरी नहीं करने का फैसला किया है। अब इस कदम की जरूरत नहीं है क्योंकि यूजर्स अपने आप ही बड़े पैमाने पर इस एप को स्वीकार कर रहे हैं। सरकार ने साथ ही कहा कि यह एप सिर्फ चोरी हुए फोन को ट्रैक और ब्लाक करने में मदद करता है और उनका गलत इस्तेमाल होने से रोकता है। अपनी मर्जी से डाउनलोड करने के लिए यह एप स्टोर पर उपलब्ध रहेगा।

निर्देश वापस लेने से पहले संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने बुधवार को लोकसभा में कहा कि संचार साथी एप किसी भी प्रकार की निगरानी का माध्यम नहीं है। यह नागरिकों के सशक्तीकरण का टूल है। बिना रजिस्ट्रेशन किए यह एप सक्रिय नहीं होता और हर नागरिक को इसका उपयोग नहीं करने या कभी भी डिलीट करने का पूर्ण अधिकार है। विपक्ष के आरोप पर उन्होंने कहा कि संचार साथी एप न केवल भारत की डिजिटल सुरक्षा का आधार है, बल्कि यह जनभागीदारी से संचालित एक ऐसा सुरक्षा प्लेटफार्म है जो हर नागरिक को स्वयं अपनी मोबाइल पहचान सुरक्षित रखने का अधिकार देता है।

- बोले, यह एप जनभागीदारी से संचालित सुरक्षा प्लेटफार्म
- इसका लक्ष्य सिर्फ प्रत्येक मोबाइल यूजर की सुरक्षा करना

संसद के शीतकालीन सत्र के दौरान बुधवार को लोकसभा में जानकारी देते केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया। एएनआइ

मंगलवार को 10 गुना बढ़े संचार साथी एप के डाउनलोड

दूरसंचार विभाग के एक सूत्र ने बुधवार को बताया कि संचार साथी एप को अचानक जनता से बहुत अच्छा रिस्पांस मिला है। मंगलवार को एक ही दिन में डाउनलोड 10 गुना बढ़कर लगभग छह लाख हो गए, जो प्रतिदिन औसत 60,000 थे। डाउनलोड की यह संख्या तब भी बढ़ी जब विपक्षी नेता और उद्योग विशेषज्ञों का एक समूह इस एप को प्री-इंस्टाल करने के सरकार के आदेश की आलोचना कर रहा था। सूत्र ने कहा कि संचार साथी एप फोन के डाटा तक सीमित एक्सेस करता है और वह भी उसी हद तक जहां तक यूजर प्रत्येक फ्राड की रिपोर्टिंग के लिए इसकी इजाजत देते हैं। संचार साथी भी रजिस्ट्रेशन से पहले फोन में एक्टिव सिम चेक करने के लिए फोन काल करने और मैनेज करने की अनुमति मांगता है।

आइसीईए ने सरकार के फैसले को सराहा

इंडिया सेलुलर एंड इलेक्ट्रानिक्स एसोसिएशन (आइसीईए) ने बुधवार को संचार साथी एप को प्री-इंस्टाल करने के निर्देश वापस लेने के सरकार के फैसले की प्रशंसा की। एसोसिएशन ने कहा कि वह साइबर सुरक्षा के लिए की गई पहल का समर्थन करती है। ऐसे उपाय तभी सबसे असरदार होते हैं जब वे बाध्यकारी न हों। इसके बजाय वे यूजर्स एवं उद्योग के लिए स्पष्टता, व्यवहारिकता और विश्वास निर्माण के जरिये प्रोत्साहन देते हों।

अपने सबसे बड़े कैबिनेट दल के साथ भारत आ रहे पुतिन

जयप्रकाश रंजन • जागरण

नई दिल्ली: रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन गुरुवार शाम सात बजे अपने विशेष विमान से नई दिल्ली पहुंचेंगे। वह अपने सबसे बड़े कैबिनेट दल के साथ भारत आ रहे हैं। नई दिल्ली पहुंचने के कुछ ही देर बाद उनकी पीएम नरेन्द्र मोदी के साथ प्रधानमंत्री निवास पर मुलाकात होगी, जहां उनके सम्मान में रात्रिभोज का भी इंतजाम किया गया है। यह मुलाकात खासी लंबी चलने की संभावना है। माना जा रहा है कि जिस तरह जुलाई, 2024 में मास्को से बाहर अपने निवास स्थान नोवो-ओगारयोवो में राष्ट्रपति पुतिन ने पीएम मोदी के साथ तकरीबन चार घंटे एकांत में बिताया था, कुछ वैसा ही माहौल गुरुवार को भारतीय प्रधानमंत्री के आधिकारिक निवास स्थान पर होगा। पिछली बार की तरह इस बार भी मोदी और पुतिन इस निजी समय में द्विपक्षीय, बहुपक्षीय और अन्य सभी मुद्दों पर बगैर किसी एजेंडे के खुलकर बात करेंगे।

व्लादिमीर पुतिन। फाइल

रक्षा संबंधों को लेकर भी होगी बातचीत

मोदी और पुतिन के बीच रक्षा संबंधों को लेकर भी बात होगी, लेकिन सूत्रों का कहना है कि किसी खरीद पर अभी सहमति बनने की संभावना कम है। भारत के रक्षा उपकरणों में रूस की हिस्सेदारी तेजी से घट रही है, लेकिन अब भी यह 36 प्रतिशत है। बहरहाल, पुतिन के स्वागत में शुक्रवार को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने भी रात्रिभोज का आयोजन किया है।

व्यापार घाटा पाटने पर भारत का जोर

रूस की तरफ से कोशिश की जा रही है कि रिटेल, सूचना प्रौद्योगिकी व प्रौद्योगिकी क्षेत्र की भारतीय कंपनियां वहां प्लांट लगाए, जबकि भारतीय पक्ष यह चाहता है कि रूस ज्यादा से ज्यादा उत्पादों व सेवाओं का आयात भारत से करे, ताकि कारोबारी घाटा को पूरा किया जा सके। भारत व रूस के बीच वर्ष 2024-25 में 68 अरब डालर का कारोबार हुआ था, लेकिन इसमें भारत का निर्यात सिर्फ पांच अरब डालर का है।

मोदी और पुतिन की अगुआई में शुक्रवार को 23वां भारत-रूस सालाना शिखर सम्मेलन होने जा रहा है। ऐसे समय जब रूस से तेल खरीद को लेकर अमेरिका भारत पर कूटनीतिक व आर्थिक दबाव बनाने में जुटा है, तब राष्ट्रपति पुतिन की नई दिल्ली यात्रा पर पूरी दुनिया की नजर है। पुतिन की यात्रा से पहले भारतीय विदेश मंत्रालय और रूसी राष्ट्रपति भवन की तरफ से बताया गया है कि इस बार दोनों देशों के लिए आर्थिक व कारोबारी मुद्दे काफी अहम रहेंगे। इस बात का संकेत इससे भी मिलता है कि राष्ट्रपति पुतिन के कैबिनेट में आर्थिक विभागों के सभी मंत्रीगण उनके साथ नई दिल्ली आ रहे हैं। इनमें आर्थिक विकास मंत्री मैक्सिम रेशेतनिकोव, व्यापार व उद्योग उप मंत्री एलेक्सी ग्रूजदेव, कृषि मंत्री ओक्साना लुट, डिजिटल संचार मंत्री सर्गेई कुशचेव होंगे। यह हाल के वर्षों में रूसी सरकार का विदेश दौरे पर जाने वाला सबसे बड़ा दल है।

75 कंपनियों के वरिष्ठ अधिकारी पहुंचे : कारोबारी संबंधों को नई दिशा देने की तैयारी का पता इस बात से भी चलता है कि पुतिन के भारत आने से एक दिन पहले रूस की 75 बड़ी कंपनियों के प्रमुख या वरिष्ठ अधिकारी नई दिल्ली पहुंच चुके हैं। दोनों देशों की 75-75 प्रमुख कंपनियों के आला अधिकारियों के साथ पुतिन और मोदी की एक साझा बैठक शुक्रवार दोपहर में होगी।

बहुत गंभीर श्रेणी में बनी हुई है दिल्ली की हवा

राज्य ब्यूरो, जागरण • नई दिल्ली

दिल्लीवासियों को प्रदूषण से राहत नहीं मिल रही है। बुधवार को भी राजधानी की हवा बहुत खराब श्रेणी में बनी रही। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के अनुसार वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआइ) 342 रहा। सुबह में प्रदूषण का स्तर अधिक था। आनंद विहार, बवाना, चांदनी चौक, जहांगीरपुरी, नेहरू नगर, आरके पुरम, विवेक विहार और बजीरपुर सहित कई अन्य स्थानों पर एक्यूआइ चार सौ के पार यानी गंभीर श्रेणी में था। लेकिन, दिन में हवा चलने से सभी स्थानों पर कुछ सुधार हुआ। मंगलवार को दिल्ली का एक्यूआइ 372 और सोमवार को 304 था।

सीपीसीबी के समीर एप के अनुसार दिल्ली में 39 निगरानी स्टेशनों में से 32 में एक्यूआइ 300 से अधिक यानी "बहुत खराब" श्रेणी में दर्ज किया गया। सबसे अधिक एक्यूआइ नेहरू नगर में 378 दर्ज किया गया। आरके पुरम, बुराड़ी, आनंद विहार, मुंडका, बवाना, विवेक विहार, अलीपुर, शादीपुर और

राजधानी में प्रदूषण के विरोध में जंतर मंतर पर आक्सीजन सिलेंडर व एयर प्यूरीफायर लेकर प्रदर्शन करते लोग। हरीश कुमार

नार्थ कैंपस में भी हवा की गुणवत्ता 'बहुत खराब' श्रेणी में रही।

दिल्ली के लिए वायु गुणवत्ता पूर्व चेतावनी प्रणाली के अनुसार, अगले कुछ दिनों तक अगले कुछ दिनों तक प्रदूषण से राहत मिलने की उम्मीद नहीं है। आइआइटीएम पुणे के डिसीजन सपोर्ट सिस्टम (डीएसएस) के अनुसार बुधवार को दिल्ली के प्रदूषण में वाहनों से होने वाले उत्सर्जन का योगदान 16 प्रतिशत था। यह स्थानीय प्रदूषण कारकों में सबसे अधिक है। बृहस्पतिवार को परिवहन उत्सर्जन का योगदान 14.3 प्रतिशत रहने का अनुमान है।

वायु प्रदूषण के विरूद्ध प्रदर्शन जारी, जंतर-मंतर पर जुटे प्रदर्शनकारी

जासं., नई दिल्ली: वायु प्रदूषण के विरूद्ध दिल्ली वालों का विरोध प्रदर्शन जारी है। बुधवार को उन्होंने जंतर-मंतर पर विरोध प्रदर्शन किया। जिसमें विभिन्न नागरिक संगठन, छात्र नेता, पर्यावरण कार्यकर्ता व लोग शामिल हुए। जिनकी हाथों में वायु प्रदूषण के साथ ही अन्य प्रदूषण तथा उसके कारणों को लेकर स्लोगन लिखे प्ले कार्ड थे। युवाओं ने गिटार और अन्य वाद्य यंत्रों के साथ प्रस्तुति देते हुए विरोध जताया तथा केंद्र व राज्य सरकार की नीतियों और उसकी लापरवाही की कड़ी आलोचना की। इसके पूर्व इंडिया गेट व जंतर-मंतर पर वायु प्रदूषण को लेकर प्रदर्शन हो चुका है। हालांकि, इंडिया गेट पर प्रदर्शन के दौरान दुर्दांत नक्सली माडवी हिड़मा के महिमामंडन करने तथा नक्सलवाद को बढ़ावा देने के पक्ष में नारेबाजी को लेकर घिर गए थे।

फर्जी खबरें लोकतंत्र के लिए खतरा, कड़े नियमों की जरूरत : वैष्णव

नई दिल्ली, प्रेट्र : फर्जी खबरों को लोकतंत्र के लिए खतरा बताते हुए सूचना एवं प्रसारण तथा आइटी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बुधवार को लोकसभा में कहा कि एआइ जनित डीप फेक वीडियो बनाने और गलत जानकारी फैलाने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जरूरत है। उन्होंने सदन को यह भी बताया कि सरकार फर्जी खबरों और एआइ-जनित डीप फेक वीडियो पर अंकुश लगाने के लिए नए नियम बनाने और इसके लिए संस्थागत तंत्र को मजबूत करने पर काम कर रही है।

प्रश्नकाल के दौरान उन्होंने कहा, मैं ईमानदारी से कहना चाहता हूं कि फर्जी खबरें आज हमारे लोकतंत्र के लिए खतरा हैं। हमें इंटरनेट मीडिया पर फर्जी खबरों और एआइ-जनित डीप फेक के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की जरूरत है। कुछ इंटरनेट मीडिया प्लेटफार्म्स का इस्तेमाल ऐसे कई ईकोसिस्टम बनाने में किया गया है जो संविधान और संसद द्वारा बनाए गए कानूनों का पालन नहीं करना चाहते।

कहा- एआइ जनित डीप फेक वीडियो बनाने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जरूरत

आइटी मंत्री बोले, इसके लिए संस्थागत तंत्र को मजबूत करने पर काम कर रही है सरकार

संसद के शीतकालीन सत्र के दौरान सूचना एवं प्रसारण तथा आइटी मंत्री अश्विनी वैष्णव बुधवार को लोकसभा में बोलते हुए। एएनआइ

उन्होंने कहा, इनके खिलाफ सख्त कार्रवाई करने और कड़े नियम बनाने की जरूरत है। हाल ही में कुछ नए नियम भी बनाए गए हैं, यानी 36 घंटे के अंदर वीडियो हटाने का नया नियम बनाया गया है। भाजपा सदस्य निशिकांत दुबे की अध्यक्षता वाली संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी संबंधी संसदीय स्थायी समिति द्वारा की गई सिफारिशों की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि समिति ने कई अच्छे सुझाव दिए हैं और सरकार नए नियम-कानून बनाने पर काम कर रही है।

अश्विनी वैष्णव ने कहा, जहां तक फर्जी खबरों और इंटरनेट मीडिया का सवाल है तो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और हमारे लोकतंत्र की रक्षा के बीच एक बहुत ही नाजुक संतुलन है। सरकार इसी संतुलन को ध्यान में रखकर काम कर रही है। आनलाइन सट्टेबाजी गतिविधियों पर एक सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार ने आनलाइन मनी गेम्स पर अंकुश लगाने के लिए एक बहुत ही कड़ा कानून बनाया है। मोदी सरकार इस तरह के कदाचार के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने से कभी नहीं हिचकिचाती।

6.34 लाख से ज्यादा गांव मोबाइल कनेक्टिविटी से जुड़े

नई दिल्ली, आइएएनएस : केंद्रीय संचार और ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डा. पेम्मासानी चंद्रशेखर ने लोकसभा में एक लिखित उत्तर में बताया कि आप्टिकल फाइबर केबल नेटवर्क मार्च 2018 के 17.5 लाख किलोमीटर से बढ़कर सितंबर 2025 तक 42.36 लाख किलोमीटर हो गया है, जबकि बेस ट्रांसीवर स्टेशनों की संख्या मार्च 2018 के 17.3 लाख से बढ़कर अक्टूबर 2025 तक 31.4 लाख हो गई है।

इससे पिछले कुछ वर्षों में देश के डिजिटल बुनियादी ढांचे में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। अक्टूबर 2025 तक, भारत के 6,44,131 गाँवों में से 6,34,019 गांव मोबाइल कनेक्टिविटी से जुड़े हैं, जिनमें से 6,30,676 में 4जी सेवाएं हैं। इसके साथ ही ब्राडबैंड सब्सक्रिप्शन सितंबर 2018 में 48 करोड़ से बढ़कर जून 2025 में 98 करोड़ हो गए हैं। इसके अतिरिक्त, 31 अक्टूबर, 2025 तक देश भर में 3.80 लाख पीएम-वाणी वाई-फाई हाटस्पाट स्थापित किए जा चुके हैं। मंत्री ने कहा कि देश में डाटा की खपत में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जो सितंबर 2018 में प्रति ग्राहक प्रति माह 8.32 जीबी से बढ़कर सितंबर 2025 में 25.24 जीबी प्रति ग्राहक प्रति माह हो गई है, जबकि इसी अवधि के दौरान औसत वायरलेस डेटा शुल्क 10.91 रुपये प्रति जीबी से घटकर 8.27 रुपये हो गया है।

देश के डिजिटल बुनियादी ढांचे में उल्लेखनीय वृद्धि

भारतनेट के तहत 2.18 लाख पंचायतें हाई-स्पीड इंटरनेट उपलब्ध कराने के लिए तैयार

केंद्रीय पंचायती राज मंत्री राजीव रंजन (ललन) सिंह ने कहा कि देश की 2.69 लाख ग्राम पंचायतों में से लगभग 2.18 लाख पंचायतें केंद्र की भारतनेट परियोजना के तहत हाई-स्पीड इंटरनेट सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए तैयार हो गई हैं। भारतनेट परियोजना गांवों और ग्राम पंचायतों के लिए हाई-स्पीड ब्राडबैंड नेटवर्क बनाने की सरकारी पहल है।

महिलाओं पर बढ़े अपराध, तीन साल में 13 लाख केस

नई दिल्ली, आइएएनएस : देश में महिलाओं और बच्चों के खिलाफ अपराध लगातार बढ़ते जा रहे हैं, जिससे सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल उठ रहे हैं। देश में 2021 से 2023 के बीच महिलाओं के खिलाफ कुल 13,21,745 अपराध दर्ज हुए। यानि औसतन हर तीन मिनट में एक महिला किसी न किसी अपराध का शिकार हुई।

गृह राज्य मंत्री बंदी संजय कुमार की ओर से राज्यसभा में पेश किए गए आंकड़ों के अनुसार, महिला पर अपराध के मामले में उत्तर प्रदेश इन तीन वर्षों में सबसे आगे रहा। देशभर में महिलाओं के खिलाफ प्रमुख अपराधों में शामिल रहे पति या रिश्तेदारों द्वारा क्रूरता के 4,09,929 मामले तो वहीं अपहरण के 2,49,284 मामले सामने आए।

सरकार ने बताया कि बच्चों के खिलाफ अपराधों में भी लगातार वृद्धि हुई है, जिनमें सबसे अधिक मामले अपहरण और पोक्सो अधिनियम के तहत दर्ज हुए। 2021-23 के बीच कुल बाल अपराध के 4,89,188 मामले दर्ज हुए। मध्य प्रदेश में 61,981, महाराष्ट्र में 60,413 और उत्तर प्रदेश में 54,372 मामले दर्ज हुए। बाल विवाह निषेध अधिनियम के तहत 2023 में 6,038 मामले दर्ज हुए, जबकि 2022 में 1,002 और 2021 में 1,050 मामले थे।

पति या रिश्तेदारों द्वारा क्रूरता के 4,09,929 मामले सामने आए

बच्चों के खिलाफ अपराधों में भी हुई लगातार वृद्धि

बंदी संजय कुमार। फाइल

राज्यवार महिला अपराध मामले

राज्य	मामले
उत्तर प्रदेश	1,88,207
महाराष्ट्र	1,31,958
राजस्थान	1,31,246
बंगाल	1,05,313
मध्य प्रदेश	95,780

अपराधों की संख्या चिंताजनक

सरकार ने बुधवार को राज्यसभा में बताया कि घरेलू हिंसा, अपहरण, यौन अपराध और बाल शोषण जैसी घटनाओं में लगातार तीन वर्षों में बढ़ोतरी देखी गई। गृह राज्य मंत्री बंदी संजय कुमार ने कहा कि अपराधों के ये रुझान सामाजिक और कानून-व्यवस्था की चुनौतियों को उजागर करते हैं। विभिन्न राज्यों में महिलाओं के खिलाफ अत्याचार और बच्चों से जुड़े अपराधों की संख्या चिंताजनक स्तर तक पहुंच गई है।

रूस बन सकता है भारतीय निर्यात का बड़ा बाजार

राजीव कुमार ● जागरण

नई दिल्ली : अमेरिका के साथ टलते व्यापार समझौते के बीच भारत रूस के बाजार को साधने की तैयारी में है। भारत रूस में अभी सालाना सिर्फ पांच अरब डालर का निर्यात करता है, जबकि चीन रूस में सालाना 115 अरब डालर का निर्यात करता है। कपड़े, इलेक्ट्रानिक्स, मशीनरी जैसे कई आइटम ऐसे हैं, जिनका निर्यात भारत भी रूस में कर सकता है। उदाहरण के लिए भारत अभी रूस में सिर्फ 7.5 करोड़ डालर के स्मार्टफोन का निर्यात करता है, जबकि भारत स्मार्टफोन का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक व निर्यातक देश बन चुका है।

भारत रूस में सिर्फ 24.6 करोड़ डालर की दवाएं निर्यात करता है, जबकि फार्मा निर्यात में भारत के लिए यहां बड़ी संभावना दिख रही है। दो साल पहले भारत का एक व्यापारिक दल रूस में फार्मा निर्यात बढ़ाने के लिए वहां के व्यापारियों से मिला भी था। भारत से सिर्फ 2.9 करोड़ डालर का कपड़ा रूस जाता है।

कपड़े, इलेक्ट्रानिक्स, फार्मा जैसे सेक्टर के लिए रूस में बड़ी संभावना

भारत और रूस। प्रतीकात्मक

जानकारों का कहना है कि कई सेक्टर में भारत को रूस में अपने निर्यात को बढ़ाने की गुंजाइश है और ये सभी सेक्टर रोजगारपरक हैं। अब दोनों देशों के बीच स्थानीय करेंसी में लेन-देन की सुविधा भी धीरे-धीरे शुरू हो रही है। इसे ध्यान में रखते हुए ही रूस के राष्ट्रपति पुतिन की भारत यात्रा के दौरान रूस के साथ व्यापार समझौता करने की दिशा में बातचीत शुरू करने की पहल हो सकती है। गुरुवार को वाणिज्य व उद्योग मंत्री पीयूष गोयल और रूस के राष्ट्रपति कार्यालय के उप प्रमुख मैसिम ओरेशेकिन भारत-रूस बिजनेस फोरम को संबोधित करेंगे। इस दौरान दोनों देशों के 50 से अधिक उद्यमी मौजूद रहेंगे, जो आपस में निवेश व व्यापारिक मसलों पर विचार-विमर्श करेंगे। वैश्विक बाजार के जानकारों का कहना है कि ट्रंप प्रशासन की तरफ से भारत पर 50 प्रतिशत शुल्क लगाने के बाद अमेरिकी बाजार में भारत का निर्यात गिर रहा है। इसकी भरपाई के लिए भारत सघन तरीके से वैकल्पिक बाजार की तलाश कर रहा है। रूस भी एक बड़ा विकल्प हो सकता है। हाल ही में रूस ने भारत से समुद्री उत्पाद का आयात करने में दिलचस्पी दिखाई है, जिससे अमेरिका को समुद्री निर्यात में कमी की भरपाई हो सकती है। दूसरी तरफ रूस के लिए भारत बड़ा रक्षा बाजार बन सकता है। रूस भारत में रक्षा उपकरणों का निर्माण भी शुरू कर सकता है और इस दिशा में भी पुतिन की यात्रा के दौरान बातचीत हो सकती है।

'मानवीय आधार' पर गर्भवती महिला को बांग्लादेश से भारत में प्रवेश की अनुमति

नई दिल्ली, प्रेट्र : सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को ''मानवीय आधार'' पर गर्भवती महिला सुनाली खातून और उसके आठ साल के बच्चे को बांग्लादेश में भेजे जाने के कुछ महीने बाद भारत में प्रवेश की अनुमति दे दी। चीफ जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस जोयमाल्या बागची की पीठ ने बंगाल सरकार को नाबालिग बच्चे की देखभाल करने का निर्देश दिया और बीरभूम जिले के मुख्य चिकित्सा अधिकारी को सुनाली को मुफ्त प्रसव सहित हर संभव चिकित्सा सहायता प्रदान करने का निर्देश दिया।

पीठ ने केंद्र की ओर से पेश सालिसिटर जनरल तुषार मेहता की इस दलील पर गौर किया कि सक्षम प्राधिकारी महिला और उसके बच्चे को उनके अधिकारों पर कोई प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना पूरी तरह मानवीय आधार पर देश में आने की अनुमति देने पर सहमत हो गए हैं। भारत आने पर उन पर निगरानी रखी जाएगी। सुप्रीम कोर्ट केंद्र सरकार की उस याचिका पर सुनवाई कर रहा था जिसमें कलकत्ता हाईकोर्ट के 26 सितंबर के आदेश को

- **सुप्रीम कोर्ट ने सुनाली खातून को हर संभव चिकित्सा सहायता प्रदान किए जाने का दिया निर्देश**
- **कलकत्ता हाईकोर्ट के आदेश को चुनौती देने वाली याचिका पर सुनवाई कर रहा था सुप्रीम कोर्ट**

चुनौती दी गई थी। इसमें उसने सुनाली और अन्य को बांग्लादेश भेजने के केंद्र सरकार के फैसले को रद कर दिया था और इसे ''अवैध'' करार दिया था।

पीठ ने आगे कहा कि उन्हें अंततः दिल्ली वापस लाया जाएगा, जहां से उन्हें उठाया गया था और बांग्लादेश भेज दिया गया था। बहरहाल, महिला के पिता की ओर से पेश सीनियर एडवोकेट कपिल सिब्बल और संजय हेगड़े ने कहा कि यह उचित होगा कि उसे और उसके बच्चे को बंगाल में उनके गृह जिले बीरभूम लाया जाए, जहां उसके पिता रहते हैं। सिब्बल और हेगड़े ने कोर्ट से आग्रह किया कि सुनाली के पति सहित अन्य लोग भी बांग्लादेश में हैं और उन्हें भारत वापस लाने की आवश्यकता है।

तुषार मेहता ने तर्क दिया कि वह उनके भारतीय नागरिक होने के दावे का विरोध करेंगे और कहा कि वे बांग्लादेशी नागरिक हैं और केंद्र सरकार केवल मानवीय आधार पर महिला और उसके बच्चे को भारत में आने की अनुमति दे रही है। जस्टिस बागची ने कहा कि अगर महिला यह साबित कर देती है कि वह भोदू शेख की बेटी है तो यह उसकी भारतीय नागरिकता साबित करने के लिए पर्याप्त होगा। सुप्रीम कोर्ट ने मामले की सुनवाई 10 दिसंबर के लिए स्थगित कर दी।

दिव्यांग अभ्यर्थियों के लिए यूपीएससी नया नियम जोड़े : सुप्रीम कोर्ट

शीर्ष अदालत ने कहा, ताकि पात्र अभ्यर्थी सात दिन पहले तक लेखक बदलने का अनुरोध कर सकें

नई दिल्ली, प्रेट्र : सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को यूपीएससी को परीक्षाओं की अधिसूचना में एक ऐसा नियम शामिल करने का निर्देश दिया, जिससे पात्र अभ्यर्थी परीक्षा से कम से कम सात दिन पहले तक लेखक बदलने का अनुरोध कर सकें। कोर्ट ने यूपीएससी को दो महीने के अंदर अनुपालन हलफनामा दाखिल करने को भी कहा, जिसमें आयोग द्वारा आयोजित परीक्षाओं में दृष्टिबाधित उम्मीदवारों के लिए स्क्रीन-रीडर साफ्टवेयर के इस्तेमाल की प्रस्तावित कार्ययोजना, समयसारिणी और तौर-तरीकों के बारे में भी बताया गया हो।

जस्टिस विक्रम नाथ और जस्टिस संदीप मेहता की पीठ ने कहा कि दिव्यांग लोगों को दिए गए अधिकार भलाई के काम नहीं; बल्कि समानता, सम्मान और भेदभाव नहीं करने के संवैधानिक वादे की अभिव्यक्ति हैं। सबको साथ लेकर चलने का सही तरीका सिर्फ प्रगतिशील नीति बनाना नहीं, बल्कि उन्हें ईमानदारी और असरदार तरीके से लागू करना है। शीर्ष अदालत ने 'मिशन एक्सेसिबिलिटी' नामक संगठन की याचिका पर अपना फैसला सुनाया। फैसले में शीर्ष अदालत ने निर्देश दिया कि लेखक बदलने के पात्र अभ्यर्थी के आवेदन पर सही तरीके से विचार किया जाए और आवेदन प्राप्त होने के तीन दिनों के भीतर तार्किक आदेश देकर उसका निपटारा करे। कोर्ट ने यूपीएससी की ओर से अनुपालन हलफनामा मिलने तक मामले की सुनवाई अगले वर्ष 16 फरवरी तक टाल दी।

सदाबहार मित्र के साथ शिखर वार्ता

हर्ष वी. पंत

कोई भी साझेदारी परस्पर हितों को सम्मान देने पर ही समृद्ध होती है और इस मामले में मास्को ने दिल्ली को कभी निराश नहीं किया

आज से दो दिवसीय भारत-रूस शिखर सम्मेलन आरंभ होने जा रहा है। इसमें अन्य अनेक मुद्दों के साथ ही रक्षा सहयोग पर गहन चर्चा की उम्मीद है। इस दौरान दोनों देशों के रक्षा मंत्रियों के बीच भी बैठक होगी। दोनों रक्षा मंत्रियों के बीच यह इस साल की दूसरी बैठक है। इस दौरान कई समझौतों पर मंथन होगा। समझौतों के लिए वार्ता के इस क्रम में सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल प्रणाली एस-400, पांचवीं पीढ़ी के सुखोई विमानों की खरीद और विभिन्न रक्षा उपकरणों के साझा उत्पादन जैसे प्रमुख पहलू शामिल होंगे। शीत युद्ध के दौर से ही रूस भारत का सबसे प्रमुख रक्षा साझेदार बनकर उभरा है, जिसने समय-समय पर भारत को प्रमुख हथियारों की आपूर्ति अनवरत बनाए रखी। प्रगाढ़ होते द्विपक्षीय रक्षा सहयोग को कई पहलुओं ने प्रेरित किया है। मास्को ने नई दिल्ली के साथ सैन्य तकनीक साझा करने और भारत में निर्माण की मंशा से 1962 में मिग-21 के उत्पादन की दिशा में पहल की थी। उसी दौर में अमेरिका सैन्य साजोसामान की आपूर्ति पर प्रतिबंध लगाने में लगा हुआ था। अमेरिका द्वारा 1965 में लगाए गए ऐसे प्रतिबंधों के उलट पूर्ववर्ती सोवियत संघ ने 1967 में भारतीय वायु सेना को सुखोई-7 बमवर्षक विमानों की आपूर्ति करके उसे सशक्त बनाया। ये विमान प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान के पास उस समय उपलब्ध विमानों की तुलना में कहीं अधिक उन्नत थे।

उसके अगले दशक में सोवियत संघ ने रक्षा विविधीकरण से जुड़ी भारत की संवेदनशीलता एवं आवश्यकताओं को समझते हुए उसे उन्नत हथियारों एवं तकनीक से लैस करने के प्रयास तेज किए। इनमें टैंक, लड़ाकू विमानों, मिसाइल की आपूर्ति के साथ ही युद्धपोतों को उन्नत बनाया गया। दोनों देशों के बीच विश्वास का ऐसा भाव बढ़ा कि सोवियत संघ ने 1987 में भारत को परमाणु संचालित पनडुब्बी भी लीज पर दी। इसके बाद एक ऐसा समय आया कि सोवियत संघ स्वयं आंतरिक उथल-पुथल से ग्रस्त हुआ और उसका स्वाभाविक असर भारत के साथ रक्षा सहयोग पर भी पड़ा। हालांकि इस सदी के पहले दशक में नवीन स्वरूप में रूस ने इस साझेदारी को नए सिरे से आगे बढ़ाना शुरू किया। इस अवधि में रूस द्वारा उपलब्ध कराए गए हथियारों और उपकरणों में विमान, हेलीकाप्टर, युद्धक टैंक, मिसाइलें, फ्रिगेट और पनडुब्बियां शामिल थीं। रूस ने एक नई परमाणु संचालित पनडुब्बी लीज पर देने के अलावा विमान वाहक पोत के स्तर पर भी सहयोग किया। दोनों देशों के बीच रक्षा संबंधों की मजबूती का आकलन इसी से किया जा सकता है कि तमाम आवश्यकताओं के लिए भारत आज भी रूसी प्लेटफार्म की ओर देखता है। टी-72 और टी-90 जैसे युद्धक टैंक भारतीय सेना के टैंक बेड़े की बुनियाद बने हुए हुए हैं। इसी तरह सुखोई एसयू-30 विमान को भारतीय वायु सेना की रीढ़ माना जाता है। ब्रह्मोस मिसाइल को अगर दोनों देशों के सामरिक सहयोग एवं संयुक्त उत्पादन क्षमताओं का शिखर कह दिया जाए तो कहीं गलत नहीं होगा। इस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल ने आपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान पर ऐसा कहर बरपाया कि दुनिया के तमाम देश इसे खरीदने की कतार लगाए हुए हैं। ब्रह्मोस को और उन्नत एवं मारक बनाने की प्रक्रिया भी प्रगति पर है।

अवधेश राजपूत

भारत-रूस रक्षा साझेदारी की निरंतरता एवं स्थायित्व में कोई आश्चर्य की बात नहीं है। यह साझेदारी हर कसौटी पर खरी उतरी है। इसमें कभी गतिरोध या अविश्वास का भाव नहीं रहा। यही कारण है कि दूसरे देशों से रक्षा खरीद के साथ ही आज भी भारत के लिए रूसी सैन्य उपकरणों के लिए रखरखाव और पुर्जों की आवश्यकता बनी हुई है। अच्छी बात है कि भारत अब टैंकों और लड़ाकू विमानों के लिए नए इंजनों को अपनाने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। रूस द्वारा नए इंजनों के विकास से भारत को भी अपना बेड़ा उन्नत बनाने का अवसर मिल रहा है। मास्को द्वारा सुखोई एसयू-30एमकेआइ बेड़े के लिए उन्नत एएल-41 इंजनों की आपूर्ति का प्रस्ताव इसी से जुड़ा है।

कोई भी साझेदारी परस्पर हितों को सम्मान देने पर ही समृद्ध होती है और इस मामले में मास्को ने कभी निराश नहीं किया। तकनीकी हस्तांतरण और स्थानीय उत्पादन के भारत के आग्रह को समझते हुए रूस की प्रतिक्रिया बहुत सकारात्मक रही है। सुखोई एसयू-57 विमानों के हालिया सौदे में इसके संकेत भी मिले हैं। सामुद्रिक मोर्चे पर भारत की सामरिक चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए आधुनिक पोत बनाने के लिए गैस टरबाइन जैसे प्रमुख घटक की आपूर्ति को लेकर भी रूस ने प्रभावी समाधान निकालने की दिशा में कदम बढ़ाए हैं।

आपरेशन सिंदूर के दौरान एस-400 प्रणाली कितनी उपयोगी साबित हुई, उसे फिर से बताने की आवश्यकता नहीं। रूस की इस कारगर हथियार प्रणाली की महत्ता को समझते हुए ही भारत ने इसका बेड़ा बढ़ाने का फैसला किया है। करीब 120, 200, 250 और 380 किलोमीटर मारक क्षमताओं वाली एस-400 खरीदने से जुड़े अनुबंध पर चर्चा जारी है। चूंकि यह वार्ता अभी आरंभिक चरण में है, इसलिए उसमें कुछ समय लग सकता है। इसके अलावा यूक्रेन युद्ध में रूस की सक्रियता भी इसमें कुछ देरी का कारण बन सकती है। यह बहुत स्वाभाविक है कि यूक्रेन युद्ध के कारण रूस की पहली प्राथमिकता अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने की होगी। इसके बावजूद भारत की आवश्यकताओं को लेकर रूस की कोई उदासीनता नहीं दिखी। यह शिखर सम्मेलन उसकी प्रतिबद्धताओं पर नए सिरे से प्रकाश डालने का ही काम करेगा। यह सही है कि बदली हुई वैश्विक परिस्थितियों और सामरिक खरीदारी में विविधीकरण के भारतीय प्रयासों के बीच रूस की भारतीय हथियार बाजार में हिस्सेदारी कम हो रही है, लेकिन वह एक प्रमुख आपूर्तिकर्ता तो बना ही रहेगा।

(लेखक आब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन में उपाध्यक्ष हैं)

response@jagran.com

विदेश में पढ़ने से लेकर घूमना-फिरना हुआ महंगा

रुपये में रिकार्ड गिरावट से विदेश में पढ़ने वाले बच्चों को पैसा भेजने की लागत आठ प्रतिशत तक बढ़ी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : डालर के मुकाबले रुपये में हो रही लगातार गिरावट का असर विदेश में पढ़ने वाले बच्चों के माता-पिता की जेब पर दिखने लगा है। इतना ही नहीं रुपये के कमजोर होने से विदेश में घूमना-फिरना भी पहले की तुलना में महंगा साबित हो रहा है। इसकी वजह यह है कि डालर या यूरो लेने के लिए अब पहले की तुलना में अधिक रुपये खर्च करने पड़ रहे हैं। जानकारों का मानना है कि रुपये में अगर इस प्रकार की गिरावट जारी रही तो आने वाले समय में कई इलेक्ट्रानिक्स वस्तुएं महंगी हो जाएंगी, क्योंकि इन वस्तुओं के निर्माण में इस्तेमाल होने वाले कच्चे माल के लिए हम अब भी आयात पर निर्भर है और रुपये में कमजोरी से आयात के लिए पहले की तुलना में अधिक कीमत चुकानी पड़ेगी।

7.5 लाख से अधिक भारतीय छात्र विदेश में कर रहे हैं पढ़ाई

- भारतीय मुद्रा में गिरावट जारी रही तो इलेक्ट्रानिक्स वस्तुएं हो जाएंगी महंगी
- सीईए ने कहा- भारतीय मुद्रा में गिरावट का इकोनमी पर नहीं पड़ेगा असर

रुपये में लगातार गिरावट को देखते हुए शेयर बाजार से विदेशी संस्थागत निवेश की भी निकासी बढ़ गई है।

इस सबके बीच मुख्य आर्थिक सलाहकार (सीईए) वी अनंत नागरेश्वरन ने रुपये की कीमत में गिरावट के चलते इकोनमी पर पड़ने वाले किसी बुरे असर की आशंकाओं से इन्कार किया है। उद्योग संगठन सीआइआइ के एक कार्यक्रम के दौरान सीईए ने मीडिया से कहा, ''रुपये की कीमत में गिरावट से महंगाई या निर्यात पर कोई असर नहीं पड़ रहा है।'' उन्होंने कहा कि सरकार भारतीय मुद्रा के कमजोर होने से परेशान नहीं है। हालांकि, उन्होंने यह भी कहा कि अगले साल रुपये में सुधार होना चाहिए। इस साल अब तक डालर के मुकाबले रुपये में पांच गिरावट आई है।

आरबीआइ बाजार में डालर बेचकर रुपये को बहुत ज्यादा उतार-चढ़ाव से बचाने में दखल दे रहा है, लेकिन विदेशी मुद्रा की दिक्कतों के चलते यह एक हद से ज्यादा नहीं किया जा सकता है। रुपये में गिरावट की वजह कमजोर विदेशी फ्लो और भारत-अमेरिका ट्रेड डील को लेकर अनिश्चितता है।

पहली बार 90 के पार जाकर बंद हुआ रुपया

बुधवार को रुपया पहली बार 90 डालर के स्तर को पार कर गया और 19 पैसे नीचे गिरकर 90.15 के नए निचले स्तर पर बंद हुआ। पिछले एक साल में डालर के मुकाबले भारतीय मुद्रा में छह रुपये की गिरावट आई है। पिछले साल तीन दिसंबर को एक डालर का मूल्य 84.68 रुपये था जो बुधवार शाम को 90.15 पर पहुंच गया।

विकिरण रोधी कवक से बनेगी चंद्र निर्माण सामग्री

यूक्रेन में चेरनोबिल परमाणु आपदा के लगभग 40 साल बाद, विज्ञानियों ने एक ऐसे जीवन रूप की खोज की है जो पीछे छूटे विकिरण पर पनप रहा है। क्लैडोस्पोरियम स्फेरोस्पर्मम नामक एक विचित्र कवक, जो परित्यक्त रिएक्टर की दीवारों पर उगता हुआ पाया गया, न केवल घातक विकिरण से बचना सीख गया है, बल्कि इसके कई प्रकार अब विकिरण की उपस्थिति में तेजी से बढ़ते हैं। परमाणु विकिरण पर निर्भर इस गहरे हरे रंग के फफूंद को विज्ञानी भविष्य के चंद्रमा ठिकानों के लिए निर्माण सामग्री के रूप में देख रहे हैं जो अंतरिक्ष यात्रियों को हानिकारक विकिरण से बचाएगी।

परमाणु विस्फोटों से निकलने वाले गामा किरणों को ऊर्जा में परिवर्तित करता है कवक

अध्ययन में कुछ ही कवकों, यानी परीक्षण किए गए 47 में से नौ प्रजातियों में ही यह व्यवहार प्रदर्शित हुआ। ये प्रजातियां परमाणु विस्फोटों से निकलने वाले सबसे शक्तिशाली और खतरनाक विकिरण, गामा किरणों को रासायनिक ऊर्जा में परिवर्तित कर देती हैं, ठीक उसी तरह जैसे सामान्य पौधे प्रकाश संश्लेषण के दौरान सूर्य के प्रकाश को परिवर्तित करते हैं। परीक्षणों से पता चला है कि सी स्फेरोस्पर्मम रेडियोधर्मी कणों को फंसाकर उन्हें निष्क्रिय कर देता है। इस कारण, इस कवक को रेडियोट्राफिक कवक माना जाता है, क्योंकि 'रेडियो' शब्द का अर्थ होता विकिरण है और 'ट्राफिक' शब्द का अर्थ किसी चीज को पोषण देना या उसे उपयोगी ऊर्जा में परिवर्तित करना है।

सी स्फेरोस्पर्मम को मेलेनिन से मिलती है विकिरण-नाशक क्षमता

विज्ञानियों का कहना है कि सी स्फेरोस्पर्मम अपनी विकिरण-नाशक क्षमता मेलेनिन से प्राप्त करता है। शोधकर्ताओं ने इस सिद्धांत को रेडियोसिंथेसिस नाम दिया है। मानव त्वचा और कई अन्य जीवों की त्वचा में, मेलेनिन सूर्य से आने वाली हानिकारक पराबैंगनी विकिरण के विरुद्ध एक ढाल का काम करता है। जब एक गामा किरण चेरनोबिल के कवक के मेलेनिन से टकराती है, तो वह उसके इलेक्ट्रानों को हिला देती है और परमाणु स्तर पर रासायनिक ऊर्जा उत्पन्न करती है, जिसका उपयोग कवक अपनी वृद्धि और मरम्मत के लिए करता है।

चंद्रमा के लिए बनेगी 'फंगल ईंटें'

अब, नासा के विज्ञानी इस कवक का उपयोग करके 'फंगल ईंटें' बनाने का तरीका खोज रहे हैं, जो हल्की निर्माण सामग्री के रूप में काम करेंगी और चंद्रमा या मंगल ग्रह के ठिकानों को भारी सीसे की ढालों की तुलना में ब्रह्मांडीय विकिरण से कहीं बेहतर तरीके से बचा सकेंगी। अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आइएसएस) पर, यह कवक अंतरिक्ष विकिरण के संपर्क में आने पर 21 गुना तेजी से बढ़ा और इसकी एक बड़ी मात्रा को अन्य सतहों में प्रवेश करने से रोक दिया, जिससे यह भविष्य के अंतरिक्ष यात्रियों की सुरक्षा के लिए एक अहम दावेदार बन गया। इसे पृथ्वी पर परमाणु अपशिष्ट स्थलों की सफाई के काम में भी लाया जाएगा।

क्या है चेरनोबिल आपदा

चेरनोबिल आपदा एक परमाणु विगलन था जो 26 अप्रैल, 1986 को शुरू हुआ था। इसके परिणामस्वरूप मानव इतिहास में पर्यावरण में रेडियोधर्मी पदार्थों का सबसे बड़ा उत्सर्जन हुआ। इस दुखद आपदा के बाद, विकिरण के अत्यधिक स्तर से बचने के लिए निवासियों को चेरनोबिल और आसपास के क्षेत्रों से निकाला गया था। तब से, इस क्षेत्र को चेरनोबिल अपवर्जन क्षेत्र (सीइजेड) के रूप में जाना जाता है। यह 48 किमी का क्षेत्र सोवियत संघ द्वारा स्थापित किया गया था, जो उस समय यूक्रेन पर नियंत्रण रखती था।

जागरण रिसर्च